ग्रामीण प्रतिरूप

17.4m.2022. 325

बिहार एक कृषि प्रधान तथा ग्राम बहुल राज्य है, क्योंकि यहाँ कि 89% लगभग जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। विविधतापूर्ण स्थलाकृतिक संरचना, सामाजिक आर्थिक एवं साँस्कृतिक विशेषताओं के कारण ग्रामीण जनसंख्या के अधिवास प्रतिरूपों में भी व्यापक भिन्नता देखने को मिलती है।

बिहार का बहुत थोड़ा भाग पहाड़ी है। जहाँ कि भिन्न परिस्थितियाँ बस्तियों के विशेषताओं में कुछ अंतर स्थापित कर देती है। और इन पहाड़ी को छोड़कर शेषभाग में बहुत कुछ समानता पाई जाती है।

समतल भू-भाग में भी कुछ स्थानीय परिस्थियाँ खासकर बाढ़ प्रभावित क्षेत्र, नदियों का किनारा, दलदली क्षेत्र इत्यादि बस्तीयों की विशेषताओं में विषमता प्रस्तुत करती है।

स्पष्टतः प्राकृतिक रूप से विकसित हुई बिहार की बस्तीयाँ अनियोजित हैं क्योंकि बाह्य आकार तथा आंतरिक संरचना का निर्धारण बसाव स्थल के स्वरूप तथा नदी, नाली, तालाब, नहर तथा सड़क आदि से प्रभावित है।

इनका निर्माण आर्थिक-सामाजिक तथा साँस्कृतिक परिस्थितियों जैसे— खेत के आकार, कच्ची एवं पक्की सड़कें धार्मिक स्थल तथा सुरक्षा के साधन आदि के कारण हुआ है।

उपर्युक्त कारकों के प्रभाव में बिहार में निम्न प्रकार के प्रतिरूप पाए जाते हैं —

1. रैखीय प्रतिरूप
2. आयताकार/ ~~वर्गाकार~~
3. चौकोर प्रतिरूप
4. वृत्ताकार प्रतिरूप
5. सतरंजी प्रतिरूप
6. त्रिभुजाकार प्रतिरूप
7. सिढीनुमा प्रतिरूप
8. अन्य प्रतिरूप

Scanned with CamScanner

1. रेखीय प्रतिरूप ——

इसका विकास किसी प्रमुख सड़क, नहर या तटबंध के सहारे लंबाई में दूर तक होता है।

जैसे :—

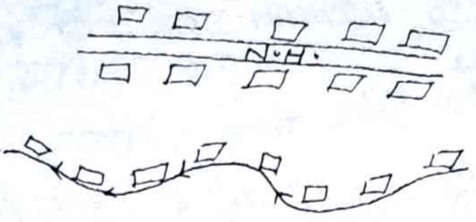

बिहार में इस प्रकार के अधिवास गंगा के मैदानी भागों विशेष कर खगड़िया पूर्णिया आदि जिलो में देखने को मिलता है। बेगुसराय में N.H के किनारे जहाँ नदियों से बने प्राकृतिक तटबंध पर इस प्रकार के अधिवास प्रतिरूप का विकास हुआ है।

2. आयताकार/वर्गाकार प्रतिरूप ——

इसका विकास तालाब के चारो ओर स्थित ऊँचे टीले पर होता है जिससे बस्ती के अंदर खुली जगह रह जाती है।

दो मुख्य सड़को के मिलन स्थल पर सड़क के किनारे बस्ती का विकास चौकोर/आयताकार होता है। बीच की खुली जगह में तालाब, धार्मिक स्थल अथवा खलिहान आदि होते है।

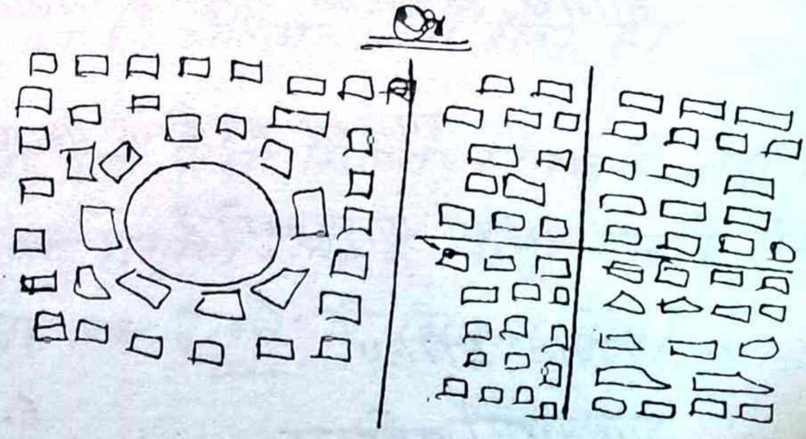

चित्र :- आयताकार/वर्गाकार प्रतिरूप

Scanned with C

जैसे —— बिहार में इस प्रकार का अधिवास प्रतिरूप मध्य एवं पूर्वी ~~चारों ओर~~ भागों में पाई जाती है। ~~जब किसी सड़क/चौराहे के~~
~~आयताकार स्वरूप का विकास है~~

चौकोर प्रतिरूप ——

—— जब किसी सड़क या चौराहे के चारों ओर आयताकार स्वरूप का विकास होता है तो यह कालांतर में चौकार अधिवास प्रतिरूप का स्वरूप ग्रहण कर लेता है। ऐसी स्थिती में बाजार कस्बे का रूप धारण कर लेता है।

जैसे —— बिहार में ~~म०~~ भागलपुर जिले का कुर्सैला गॉव इस प्रकार के अधिवास का सबसे अच्छा उदाहरण है।

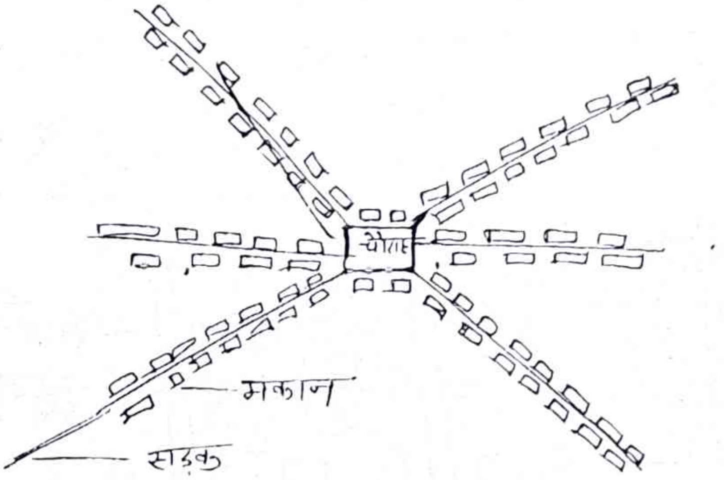

वृत्ताकार प्रतिरूप ——

जब किसी तालाब मंदिर, हवेली के चारो ओर अधिवास का विकास होता है तो इसका प्रतिरूप वृत्ताकार होता है। इस अधिवास के केन्द्र की स्थिती आकर्षक होती है। और केन्द्रीय भाग गल्ली, सड़क अथवा पगडंडी से जुड़ा होता है।

जैसे —— बिहार के बाँका जिले का धनकुंड गॉव इसका अच्छा उदाहरण है जहाँ धनकुंडनाथ मंदिर के चारो ओर गॉव का विकास हुआ है।

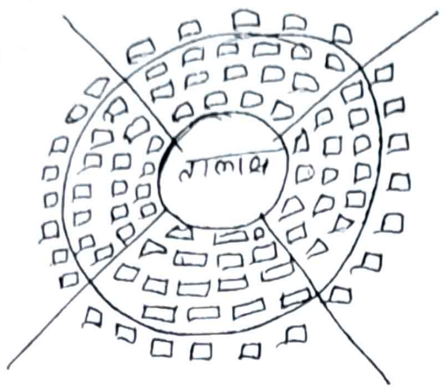

सातरंजी प्रतिरूप :—

इसका विकास नियोजित ढंग से होता है इसमें समांतर गलियों को अन्य समांतर गलियाँ लंबवत रूप से काटती है। जिससे सम्पूर्ण ग्राम का अधिवास क्षेत्र आयताकार अथवा वर्गाकार भू-खंडों में विभाजित हो जाता है। और प्रत्येक भू-खंड के चारो ओर गलियाँ पाई जाती है जिसके किनारे-2 गृह/मकान बने होते है।

18 जून. 2021 जैसे :—

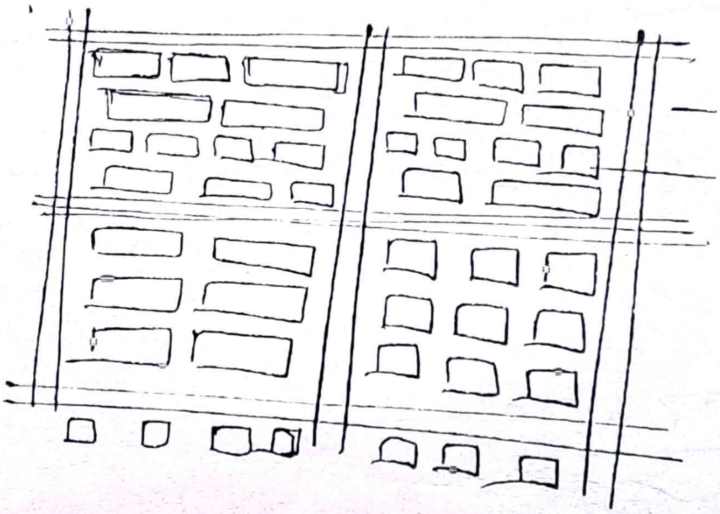

बिहार के समतल मैदानी भागों में इस प्रकार के प्रतिरूप देखने को मिलते है। सारण जिला अंतर्गत सरैया गाँव तथा रोहतास जिला अंतर्गत रसूलपुर गाँव इसका अच्छा उदाहरण है।

त्रिभुजाकार प्रतिरूप —

मुख्य सड़क से जब दूसरी सड़क आकर मिलती है तो वहाँ त्रिभुजाकार अधिवास का विकास होता है। इस प्रकार के अधिवास में पहले मुख्य सड़क के किनारे अधिवास फिर उससे निकलने वाली सड़क के किनारे अधिवास का विकास होता है।

उदाहरण — बिहार के सहरसा जिले में इस प्रकार के अधिवास मिलते हैं।

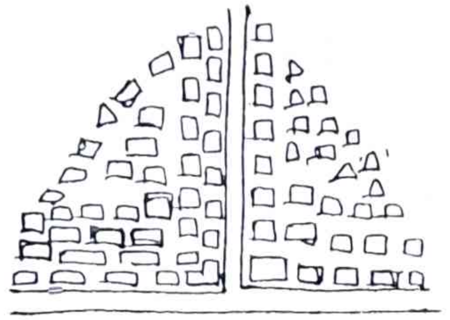

सीढ़ीनुमा प्रतिरूप —

यह पर्वतीय एवं पहाड़ी ढालों पर विकसित होता है। पहाड़ी ढालों को चौरस कर वहाँ प्रतिबद्ध रूप में मकान बनाए जाते हैं। फलतः वहाँ सीढ़ीनुमा आकृति के प्रतिरूप का विकास होता है।

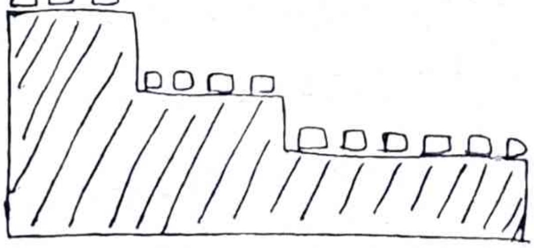

जैसे — बिहार में गया, नावादा, जमुई तथा पूर्वी व पश्चिमी चम्पारण के जिलों में इस प्रकार के प्रतिरूप देखने को मिलते हैं।